P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-4* ISSUE-7* March- 2017
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनकी सृजनात्मकता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

सरिता शर्मा
शोधार्थी,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
महात्मा ज्योति राव फूले विश्वविद्यालय,
जयपुर ,राजस्थान

रवीन्द्र कुमार शर्मा
शोधार्थी,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
महात्मा ज्योति राव फूले विश्वविद्यालय,
जयपुर ,राजस्थान

सारांश

प्रस्तुत शोध अध्ययन माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनकी सृजनात्मकता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन था। न्यादर्श के रूप में नवीं कक्षा के ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र के विद्यालयों के 160 विद्यार्थियों को लिया गया है। शोध निष्कर्षों से यह पता चलता है कि ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों के 9वीं कक्षा के उच्च एवं निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर वाले विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में सार्थक अन्तर नही है।

मुख्य शब्द : सामाजिक–आर्थिक स्तर एवं सृजनात्मकता

प्रस्तावना

सृजनात्मकता मनुष्य के व्यक्तित्व का महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह विद्यार्थीयों के बहुआयामी व्यक्तित्व का मानव को दिया गया एक अद्वितीय वरदान है। यह एक बहुमूल्य निधि है। किसी भी राष्ट्र की उन्नति, प्रगति और उत्थान–सृजनात्मकता एवं रचनात्मकता पर निर्भर करता है । बालको का मन व हदय बहुत ग्रहणशील होता है । इसलिए वे परिवार विद्यालय, समाज आदि के जिस वातावरण में पलते है उसकी गहरी छाप उनके मन, बुद्वि, क्षमता तथा योग्यता पर पड़ती है जिससे उनकी सृजनात्मक कुशलता प्रभावित होती है । बालको का लालन–पालन, देख–रेख, शिक्षा–दीक्षा जिस प्रकार के पारिवारिक वातावरण में होती है । उनकी सृजनात्मकता का स्तर भी उसी के अनुसार विकसित होता है । यहॉ तक कि परिवार की सामाजिक–आर्थिक स्थिति प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से बालक के विकास, व्यक्तित्व गठन तथा सृजनात्मकता के स्तर तथा कुशलता पर प्रभाव डालती है। अब प्रश्न उठता है कि क्या वर्तमान में भी उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले विद्यार्थियों का सृजनात्मकता स्तर निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले विद्यार्थियों से भिन्न होता है? क्या छात्र व छात्राओं के सामाजिक–आर्थक स्तर का उनकी सृजनात्मकता पर पडने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर पाया जाता है ?

उपर्युक्त आधार पर यह आवश्यकता अनुभव की गई कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक आर्थिक स्तर का उनकी सृजनात्मकता पर पडने वाले प्रभाव का अध्ययन किया जाये ।

इसी उद्देश्य को दृष्टि में रखते हुए समस्या को शोध का विषय माना गया है।

समस्या कथन

''माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक आर्थिक स्तर का उनकी सृजनात्मकता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन''

शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्न है :–

1. नवीं कक्षा के ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों के सामाजिक आर्थिक स्तर का उनकी सृजनात्मकता पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. नवीं कक्षा के विद्यार्थियों के सामाजिक आर्थिक स्तर तथा उनकी सृजनात्मकता में सह सम्बन्ध का अध्ययन करना ।

शोध की परिकल्पनाऍ

1. नवीं कक्षा के ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के सामाजिक आर्थिक स्तर तथा उनकी सृजनात्मकता में सार्धक अन्तर नही है।
2. नवीं कक्षा के शहरी क्षेत्र के विधार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर तथा उनकी सृजनात्मकता में सार्थक अन्तर नहीं है।

3. नवीं कक्षा के विद्यार्थियों के सामाजिक आर्थिक स्तर तथा उनकी सृजनात्मकता में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं है।

शोध अध्ययन का परिसीमन

1. प्रस्तुत शोध जयपुर जिले तक ही सीमित रखा गया है ।
2. प्रस्तुत शोध माध्यमिक स्तर की 9वीं कक्षा तक ही सीमित रखा गया है।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त न्यादर्श

यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा न्यादर्श का चयन किया गया है।

9वीं कक्षा के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र से 160 विद्यार्थियों का न्यादर्श के रूप में चयन किया गया है।

9वीं कक्षा
160 विद्यार्थी

80 ग्रामीण विद्यार्थी

80 शहरी विद्यार्थी

शोध अध्ययन में प्रयुक्त विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए ''**सर्वेक्षण विधि**'' का चयन किया गया है।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण

सामाजिक–आर्थिक स्तर को मापने हेतु उपाध्याय सक्सेना सामाजिक–आर्थिक स्तर मापनी ''तथा सृजनात्मकता के मापन हेतु '' बाकर महेन्दी सृजनात्मक परीक्षण '' का प्रयोग किया गया है।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी

मध्यमान, प्रमाप विचलन, टी टैस्ट, सहसम्बन्ध ।

तथ्यों का विश्लेषण एवं परिकल्पना की जॉच

तालिका संख्या –1

ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर तथा सृजनामकता में सम्बन्ध

	r	t	सार्थकता
सामाजिक आर्थिक स्तर सृजनात्मकता	0.20	1.80	सार्थक सहसम्बन्ध नही है।

स्वातन्त्रयांश –158 सार्थकता स्तर – 0.05 – 1.98
0.01 – 2.61

सारणी 1 दर्शाती है कि ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर तथा उनकी सृजनात्मकता का परिकलित मान 1.80 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 तथा 0.01 सार्थकता के स्तर तथा 158 स्वातन्त्रयांश पर क्रमशः प्राप्त सारणिक मान 1.98 तथा 2.61 से कम है इसलिए निष्कर्ष निकलता है कि ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के सामाजिक आर्थिक स्तर तथा उनकी सृजनात्मकता में कोई सार्थक सह सम्बन्ध नही पाया जाता है।

अतः शून्य परिकल्पना, '' नवीं कक्षा के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर तथा उनकी सृजनात्मकता में कोई सार्थक सह सम्बन्ध नहीं है '' को स्वीकार किया जाता है।

तालिका संख्या–2

शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर तथा सृजनात्मकता में सम्बन्ध

	r	t	सार्थकता
सामाजिक आर्थिक स्तर सृजनात्मकता	0.08	0.71	सार्थक सहसम्बन्ध नही है।

स्वातन्त्रयांश –158 सार्थकता के स्तर 0.05 – 1.98
0.01 – 2.61

सारणी 2 दर्शाती है कि शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर तथा सृजनात्मकता का परिकलित मान 0.71 प्राप्त हुआ है, जो कि 0.05 तथा 0. 01 सार्थकता के स्तर तथा 158 स्वातन्त्रयांश पर क्रमश : प्राप्त सारणिक मान 1.98 से कम है इसलिए निष्कर्ष स्वरूप यह कहा जा सकता है कि शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर तथा उनकी सृजनात्मकता में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं पाया जाता है।

अतः शून्य परिकल्पना '' नवीं कक्षा के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर तथा उनकी सृजनात्मकता में कोई सार्थक सह–सम्बन्ध नही है'' को स्वीकार किया जाता है।

सारणी संख्या –3

सभी विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर तथा सृजनात्मकता में सम्बन्ध

	r	t	सार्थकता
सामाजिक आर्थिक स्तर सृजनात्मकता	0.04	0.71	सार्थक सहसम्बन्ध नही है।

स्वातन्त्रयांश –318 सार्थकता के स्तर 0.05 – 1.98
0.01 – 2.59

सारणी 3 दर्शाती है कि न्यादर्श के सभी विद्यार्थियों के सामाजिक आर्थिक स्तर तथा उनकी सृजनात्मकता का परिकलित मान 0.50 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 तथा 0.01 सार्थकता के स्तर तथा 318 स्वातन्त्रयांश पर प्राप्त सारणिक मान 1.98 तथा 2.59 से कम है। इसलिए निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि विद्यार्थियो के सामाजिक आर्थिक स्तर तथा उनकी सृजनात्मकता में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं पाया जाता है।

अतः शून्य परिकल्पना '' नवीं कक्षा के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर तथा उनकी सृजनात्मकता में कोई सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं है '', को स्वीकार किया जाता है।

शोध अध्ययन का परीक्षण

प्राप्त निष्कर्ष यह बताते है कि उपर्युक्त परिकल्पनाओं में सार्थक अन्तर नही पाया गया है अतः परिकल्पनाएँ स्वीकृत की जाती है ।

शोध निष्कर्ष

विधार्थियों का उच्च तथा निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर बहुत कम मात्रा में विद्यार्थियों की सृजनात्मकता को प्रभावित करता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *आस्मा, नूर, ' क्रियेटिविटी ऑफ बी.एड टीचर ट्रेनिंग, डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2005*
2. *आरोड़ा, रीता, मारवाह, सुदेश,– '' शिक्षा मनोविज्ञान एवं सांख्यिकी'', शिक्षा प्रकाशन, जयपुर, 2005*
3. *रेड्डी, टी. राजा शेखर, 'क्रियेटिविटी इन स्टूडेन्ट टीचर्स', डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2005*
4. *शर्मा, आर.ए., '' पैरामैट्रिक एण्ड नॉन पेरामैट्रिक स्टेटिक्स', सूर्या पब्लिकेशन्स, मेरठ, 2006*
5. *शर्मा, हेमन्तलता, '' डायनेमिक्स ऑफ क्रियेटिविटी एण्ड इन्ट्रेस्ट्स,' विस्ता इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली 2006*
6. *कुसुम, ए.–'' क्रियेटिविटी एण्ड कोगनेटिव स्टाइल्स इन चिल्डर्न', डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2007*
7. *गेने.ए.एस., गुप्ता, एम.के., दास गुप्ता, बी., 'फण्डामेटल्स ऑफ स्टेटिक्स दी वर्ड प्रेस प्राईवेट लिमिटेड, कोलकाता, 2007*
8. *सरीन एवं सरीन, '' शैक्षिक अनुसंधान की विधियॉ', अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा, 2008*
9. *भट्टानागर, आर.पी., भट्टनागर, मिनाक्षी, ''शिक्षा अनुसंधान', लायल बुक डिपो, मेरड़ 2008*

पत्र– पत्रिकाएँ

1. *बुच, एम.बी., 'शैक्षिक अनुसंधान का चौथा सर्वे, वोल्यूम–I,II राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली, 1983–88*
2. *बुच, एम.बी., 'शैक्षिक अनसंधान का पांचवा सर्वे, वोल्यूम– I,II राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली, 1988–92*